ॐ

भजन एवं ध्वनि संग्रह

लेखक :

श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज

मूल्य 75 पैसे

प्रकाशक

श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट

नई दिल्ली

सम्वत् २०४९

मुद्रक :

सिन्डीकेट बाईन्डर्स एण्ड प्रिन्टर्स, ओखला, नई दिल्ली

श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज

सूची

भजन		पृष्ठ संख्या
	श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज—	
१.	वन्दे रामं सच्चिदानन्दम्	१
२.	भज मन रामं महा अभिरामम्	१
३.	जपो जी नित्य राम राम श्री राम	२
४.	मैया मोहे मंगल दर्शन दीजै	३
५.	राम, अब ऐसा वर मैं पाऊँ	४
६.	मंगल मन्दिर खोलो दयामय	५
७.	भज मन राम चरण अरविन्दम्	६
८.	राम मुझे मधुर मिलन मिले तेरा	६
९.	मेरे राम रघुनाथ तेरी जय होवे	७
१०.	जगन्मात जगदम्बे तेरे जयकारे	८
११.	अब मुझे राम भरोसा तेरा	८
१२.	राम अब स्नेह सुधा बरसा दे	९
१३.	भजिए राम नाम सुखदाई	१०
१४.	कभी तो ऐसा अवसर आवे	१०
१५.	राम अब ऐसी विधि बनाये	१२
१६.	राम नाम लौ लागी	१३
१७.	अब मैं ने रसना का फल पाया	१३
१८.	अपने पथ पर आप चलाओ	१५

भजन		पृष्ठ संख्या
	गोस्वामी तुलसीदास जी—	
१९.	रघुवर, तुम को मेरी लाज	१६
२०.	जाके प्रिय न राम—वैदेही	१७
	श्री सूरदास जी—	
२१.	सुने री मैं ने, निरबल के बल राम	१८
२२.	जो हम भले—बुरे तो तेरे	१९
२३.	प्रभु मेरे अवगुन चित्त न धरो	२०
	अन्य सन्त भक्त कवि—	
२४.	श्री राम, तुम्हारे मन्दिर में	२१
२५.	मैं सादर सीस नवाता हूँ	२२
२६.	यही विनती है पल पल छिन छिन	२४
२७.	भजन बिन बावरे	२५
२८.	तुम आओ न आओ यहाँ पै तुम्हें	२६
२९.	देव तुम्हारे कई उपासक	२८
३०.	प्रभु जी भूल हमें मत जाना	३०
३१.	प्रीति प्रभु से जोड़ रे मन	३१
३२.	जीवन का मैं ने सौंप दिया	३२
१—७५.	कीर्तन ध्वनियाँ	३३—४०

* श्री रामाय नमः *

महाराज जी के भजन

[१]

वन्दे रामं सच्चिदानन्दम् ।।
परम पावनं प्रियतमरूपम् ।
परमेशं शुभ शक्ति स्वरूपम् ।
सर्वाधारं महा सुख कन्दम् ।।१।।
शरणागत जन पालक शरणम् ।
विघ्नहरं सुख शान्ति करणम् ।
परं पदं मंगल अरविन्दम् ।।२।।

[२]

भज मन रामं महा अभिरामम् ।।१।।
अस्ति भाति शुचि प्रियस्वरूपम् ।
निर्गुणातीतं चैतन्य रूपम् ।
जगदाधारं जगद् विरामम् ।।१।।
शक्तिमयं पुरुषोत्तम ईशम् ।
भक्त-वत्सलं श्री जगदीशम् ।
पूर्ण पुरुषं पूर्ण कामम् ।।२।।

[३]

जपो जी नित्य राम राम श्रीराम ।।
अशरण शरण अघ हरण चरण में,
मिले शान्ति विश्राम ।।१।।
चिन्तन ध्यान जाप का करना,
गाना हरि गुण ग्राम ।
सुरति शब्द संयोग रूप यह,
सहज योग है नाम।।२।।
राम राम मय नाद मधुरतम,
जब हो बिना विराम।
तब समझो कर निश्चय पूर्ण,
सुधर गये सब काम।।३।।
राम शब्द जब चले निरन्तर,
भीतर आठों याम।
सत्य समझिए फले मनोरथ,
मिला परम पद धाम।।४।।

[४]

मैया मोहे मंगल दर्शन दीजै ।।
विमल तेजोमयी मधुर मूर्ति,
मनोगमा मैं निहारूं ।
ममता मन्दिर में माँ मेरी,
अपना मुझे कर लीजै ।।१।।
भले भाव भीतर सब जागें,
भक्ति भाव भर आवे।
भारी भरोसा भगवति पाऊँ,
ऐसी करुणा कीजै ।।२।।
तेरा प्रेम बसे अंग अंग में,
तेरा राग अलापूं ।
वे मैं कर्म करूं जिस से तू,
मुझ पर मैया रीझै ।।३।।

—०—

[५]

राम, अब ऐसा वर मैं पाऊँ।।
दया दान दो परम देव जी,
वरदा दृष्टि पसारो ।
देव द्वार का जिस से सदा मैं,
दासानुदास कहाऊँ ।।१।।
ध्रुव धारणा धारूं तुझ में,
आशा एक भरोसा ।
अचल चूल वत निश्चल निश्चय,
पैरा प्रीति उर लाऊँ ।।२।।
एक भक्ति हो भगवन तेरी,
दूसरा देव न देखूं ।
राम नाम में लगन लगा कर,
दुविधा दूर भगाऊँ ।।३।।

—०—

[६]

मंगल मन्दिर खोलो दयामय,
मंगल मन्दिर खोलो ।।
अति उत्कण्ठित दर्शन को जन,
खड़ा द्वार पर तेरे ।
महा मनोहर राम नाम में,
मूर्तिमान हरि होलो ।।१।।
दो दिव्य दर्शन देव देव जी,
दया दृष्टि से देखो ।
उर लगा उत्संग में ले कर,
प्रेम सुरों से बोलो ।।२।।
वरद वरतम कर को फिराओ,
सहित प्रेम पुचकारें ।
निज बालक में वत्सलता से,
स्नेह सुधा रस घोलो ।।३।।

—०—

[७]

भज मन राम चरण अरविन्दम् ।।
चारु चरण विमल चांद सम,
हर्षावें सुर वृन्दम् ।।१।
मुद मंगल कर मुनि मन मोहक,
सहित मधुर मकरन्दम् ।।२।।
चरण शरण अघ हरण वरदवर,
शान्ति करण सुख कन्दम् ।।३।।
राम चरण शरणागत जन के,
काटें भव भय बन्धम् ।।४।।

[८]

राम मुझे मधुर मिलन मिले तेरा ।।
मन मुख माया मुख बन मोही,
भरम में भटका बहुतेरा ।।१।।
अशरण-शरण की चरण शरण में,
निश दिन बने बसेरा ।।२।।

गाऊँ मैं राम राम मधुर धुन,
सब दिन सांझ सबेरा ।।३।।
तेरे मेल में मिल हो जायें,
'मैं' तेरा 'तू' मेरा ।।४।।

[९]

मेरे राम रघुनाथ तेरी जय होव ।
जय होवे तेरी जय होवे ।।
नित्य प्रति गुण मैं तेरे गाऊँ ।
तेरे चरणों पर सीस नवाऊँ ।
गद् गद् प्रेम से सदा पुकारूँ,
जय होवे तेरी जय होवे ।।१।।
प्रेम मग्न मन होवे मेरा ।
यह जीवन हो जावे तेरा ।
सदा प्रेम से यही उचारूँ,
जय होवे तेरी जय होवे ।।२।।

—०—

[१०]

जगन्मात जगदम्बे तेरे जयकारे ।
तू शक्ति भगवती भवानी ।
महिमामयी महामाया बखानी ।
विश्व रचे पाले संहारे ।।१।।

शान्ति करी मंगल सुख रूपा ।
तू वरदा है दिव्य अनूपा ।
शरणागत के काज संवारे ।।२।।

निज जन त्राण-परायण देवी ।
असुर हरि दुर्गा सुर सेवी ।
श्री लक्ष्मी जन तुझे पुकारे ।।३।।

[११]

अब मुझे राम भरोसा तेरा ।।
मधुर महारस नाम पान कर,
मुदित हुआ मन मेरा ।।१।।

दीपक नाम जगा जब भीतर,
मिटा अज्ञान अन्धेरा ।।२।।
निशा निराशा दूर हुई सब,
आई शान्त सबेरा ।।३।।

[१२]

राम अब स्नेह सुधा बरसा दे ।।
भक्ति बदलिया उमड़ झूमती,
झड़ियां सरस लगा दे ।।१।।
घट में घटा घन नाम गर्ज से,
मन मयूर नचा दे ।।२।।
परम धाम की कृपा परा का,
पानी पूर बहा दे ।।३।।
पाप ताप से तप्त हृदय-मन,
शीतल शान्त बना दे ।।४।।

—०—

* भजन *

[१३]

भजिए राम नाम सुखदाई ।।
भ्रम भय संशय भूल सर्व तज,
भक्ति भाव उर लाई ।।१।।
मानव जन्म अमोलक पा कर,
उत्तंम करिए कमाई ।।२।।
अमृत राम नाम मधुरतम,
सिमरो सुरती टिकाई ।।३।।
पाप ताप परिहरण-शरणवर,
सब दिन जो है सहाई ।।४।।

[१४]

कभी तो ऐसा अवसर आवे ।
मेरे सत्य स्नेही साजन,
ऐसा अवसर आवे ।।
परम पुरुष के पुण्य प्रेम में,
मन मग्न हो निश दिन ।

भक्ति-भावना भीतर गहरा,
सुन्दर रंग बसावे ।।१।।
राम गीत सुन मत्त मैं झूलूं
सुधा स्वाद रस पाऊँ ।
अविरल प्रेम जल बहे नयन से,
रोम रोम हर्षावे ।।२।।
राम नाम की धीमी धीमी धुन,
घट में जगे सुरीली ।
मृदु मधुर सुताल चाल चल,
हृदय में विलसावे ।।३।।
राम-कृपा का शक्ति शान्ति से,
सुखद अवतरण भी होवे ।
चारु चक्र सहस्र कमल में,
विमल ज्योति जग जावे ।।४।।

—०—

[१५]

राम अब ऐसी विधि बनाये ।
अपने नाम धाम की प्रीति,
मुझ में बहुत बसाये ।।१।।
अजपा जाप त्रयताप पाप हर,
आप ही आप हो आये ।
राम-रमण में मन मुद माने,
महा मधुरता पाये ।।२।।
खिले कमल शुष्मणा जागे,
चित्त चाँद चमकाये ।
त्रिकुटी महल में जग मग ज्योति,
शशि रवि सम प्रकटावे ।।३।।
राम शब्द सुर सरस पकड़ कर,
दशम द्वार के ऊपर ।
पुरुषोत्तम के सत्य धाम को,
सुरति सीधी चढ़ जाये ।।४।।

[१६]

राम नाम लौ लागी ।
अब मोहे राम नाम लौ लागी ।।
उदय हुआ शुभ भाग्य का भानु,
भक्ति भवानी जागी ।।१।।
मिट गये संशय भव भय भारे,
भ्रान्ति भूल भी भागी ।।२।।
पाप हरण श्री राम चरण का,
मन बन गया अनुरागी ।।३।।

[१७]

अेब मैं ने रसना का फल पाया।
भाव चाव से राम राम जप,
अपना आप जगाया ।।१।।
राम राम की ध्वनि लगन में,
लव लीनता ला कर ।

राम नाम मधुरतम जप कर,
जीवन सफल बनाया ।।२।।
राम नाम रस चख रसना ने,
रस सरसानी हो कर ।
सभी रसों का सार सुधा सम,
राम प्रेम बसाया ।।३।।
राम नाम विलसे रसना पर,
निश दिन साँझ सवेरे ।
चलते फिरते सोते जगते,
सनी नाम से काया ।।४।।
भले भाव भीतर भर आये,
भक्ति भाव उमड़ाया ।
चम चम चमकी चित्त चारुता,
निश्चय चांद चढ़ आया ।।५।।

—०—

[१८]

अपने पथ पर आप चलाओ,
पथ पतन न पाऊँ मैं ।।
पावन पथ है परम प्रभु तेरा,
उस से पैर हटे न मेरा ।
पर पन्थों की पगडंडी पर,
स्वपनों में भी न जाऊँ मैं ।।१।।
तेरे पथ का पथिक मैं प्राणी,
संशय वश न पाऊँ हानि ।
पग पग पर डग मग न डोलूं,
प्रेम प्रबल उर लाऊँ मैं ।।२।।

—०—

महाराज जी को प्रिय सन्त भक्त कवियों के भजन

गोस्वामी तुलसीदास जी

[१९]

रघुवर, तुम को मेरी लाज ।।
सदा सदा मैं सरन तिहारी,
तुमहि गरीब निवाज ।।१।।
पतित उधारन विरद तुम्हारो,
स्रवनन सुनी आवाज ।।२।।
हौं तो पतित पुरातन कहिये,
पार उतारो जहाज ।।३।।
अघ-खण्डन दुख-भंजन जन के,
यही तिहारो काज ।।४।।
तुलसि दास पर किरपा कीजै,
भगति-दान देहु आज ।।५।।

—०—

[२०]

जाके प्रिय न राम-वैदेही ।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम,
जद्यपि परम सनेही ।।१।।
तज्यो पिता प्रह्लाद,
विभीषन बन्धु, भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रज-बनितनि,
भये मुद-मंगलकारी ।।२।
नाते नेह राम के मनियत,
सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं ।
अंजन कहा आंखि जेहि फूटैं,
बहुतक कहौं कहाँ लौं ।।३।
'तुलसी' सो सब भांति परम हित,
पूज्य प्राण तें प्यारो ।
जासों होय सनेह राम पद,
एतो मतो हमारो ।।४।।

सन्तशिरोमणि सूरदास जी

[२१]

सुने री मैंने, निरबल के बल राम।
पिछली साख भरूँ सन्तन की,
अड़े सँवारे काम ।।१।।
जब लगि गज बल अपनो बरत्यो,
नेक सरयो नहिं काम ।
निरबल ह्वै बल राम पुकारयो,
आये आधे नाम ।।२।।
द्रुपदसुता निरबल भइ ता दिन,
तजि आये निज धाम ।
दुस्सासन की भुजा थकित भई,
वसन रूप भये स्याम ।।३।।
अप-बल तप-बल और बाहु-बल,
चौथो है बल दाम ।
'सूर' किसोर कृपा तें सब बल,
हारे को हरि नाम ।४।।

[२२]

जो हम भले-बुरे तो तेरे ।
तुम्हैं हमारी लाज बड़ाई,
बिनती सुनु प्रभु मेरे ।।१।।
सब तजि तुव सरनागत आयो,
निज कर चरन गहे रे ।
तुव प्रताप-बल बदत न काहू,
निडर भये घर चेरे ।।२।।
और देव सब रंक भिखारी,
त्यागे बहुत अनेरे ।
'सूरदास' प्रभु तुम्हरि कृपातें,
पाये सुख जु घनेरे ।।३।।

—०—

* भजन *

[२३]

प्रभु मेरे अवगुन चित्त न धरो ।
समदरसी प्रभु नाम तिहारो,
अपने पनहि करो ।।१।।
इक लोहा पूजा में राखत,
इक घर बधिक परो ।
यह दुबिधा पारस नहीं जानत,
कंचन करत खरो ।।२।।
एक नदिया एक नार कहावत,
मैला नीर भरो ।
जब मिलिकै दोऊ एक बरन भए,
सुरसरि नाम परो ।।३।।
एक जीव एक ब्रह्म कहावत,
सूर स्याम झगरो ।
अब की बेर मोहे पार उतारो,
नहिं पन जात टरो ।।४।।

अन्य सन्त भक्त कवि

[२४]

अमर भावना

श्री राम, तुम्हारे मन्दिर में,
मैं दीप जलाने आया हूं ।।
नीरस सूने जीवन में,
मन के अँधेरे कोने में ।
साँसों की उजली आशामय,
शुभ ज्योति जगाने आया हूं ।।१।।
पूजन विधि विधान नहीं,
और सिमरन-साधन ध्यान नहीं।
पर अच्छे भक्ति-सुगन्ध भरे,
दो पुष्प चढ़ाने आया हूं ।।२।।
राग गीत का ज्ञान नहीं,
मुझे ताल सुरों का भान नहीं ।
पर ढीली हृदय की तारों की,
झंकार सुनाने आया हूं ।।३।।

काल की कलुषित काया में,
मतवादमयी मोह माया में ।
सद् ज्ञान का सबल सहारा ले,
जय तेरी मनाने आया हूँ ।।४।।

[२५]

मैं सादर सीस नवाता हूँ,
श्री राम तुम्हारे चरणों में ।।१।।
कुछ अपनी विनय सुनाता हूँ,
श्री राम तुम्हारे चरणों में ।।१।।
घर में वा वन में देह रहे ।
मन का पद पंकज गेह रहे ।
बढ़ता अनुदिन नव नेह रहे ।
श्री राम तुम्हारे चरणों में ।।२।।
जिस जिस योनि में भ्रमण करूँ ।
जो जो शरीर मैं ग्रहण करूँ ।

वहां कमल भृंग बन रमण करूँ ।
श्री राम तुम्हारे चरणों में ।।३।।
तेरे ही गुणों का हो कीर्तन ।
भूलूं न कभी निश दिन पल छिन ।
तन मन धन मेरा हो अर्पण ।
श्री राम तुम्हारे चरणों में ।।४।।
सुख सम्पत्ति की कुछ चाह नहीं ।
परिवार मिटे—परवाह नहीं ।
हो जाये मेरा—निर्वाह यहीं ।
श्री राम तुम्हारे चरणों में ।।५।।
है दीन हीन जन 'रामेश्वर' ।
तेरी ही कृपा पर है निर्भर ।
हो जाये किसी भी भाँति गुजर ।
श्री राम तुम्हारे चरणों में ।।६।।

—०—

[२६]
प्रेम-पथिक

यही विनती है पल पल छिन छिन ।
श्री राम . . . . . श्री राम
हो ध्यान तुम्हारे चरणों में ।।१।।
होठों पै तुम्हारा नाम रहे ।
शुभ सिमरन यह सब याम रहे ।
दिन रात यही मेरा काम रहे । श्री राम ।।२।।
चाहे संकटों ने मुझे घेरा हो ।
और चारों ओर अन्धेरा हो ।
पर चित्त न डग मग मेरा हो । श्री राम ।।३।।
चाहे कांटों पर भी चलना हो ।
और ज्वाला में भी जलना हो ।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो । श्री राम ।।४।।
चाहे वैरी सब संसार बने ।
मेरा जीवन मुझ पर भार बने ।
चाहे मृत्यु गले का हार बने । श्री राम ।।५।।

[२७]

सावधान

भजन बिन बावरे,
तूने हीरा सा जन्म गंवाया ।।
कभी न आया सन्त शरण में,
कभी न हरिगुण गाया ।
बहबह मरा बैल की न्याईं,
सोय रहा उठ खाया ।।१।।
यह संसार हाट बनिये की,
सब जग सौदे आया ।
चातुर माल चौगना कीना,
मूर्ख मूल गँवाया ।।२।।
यह संसार फूल संबल का,
सूआ देख लुभाया ।
मारी चोंच रूई निकसाई,
मूंडी धुन पछताया ।।३।।

यह संसार माया का लोभी,
ममता महल चिनाया ।
कहत कबीर सुनो भई साधो,
हाथ कछु नहीं आया ।।४।।

[२८]

प्रेम की डोर

तुम आओ न आओ यहाँ पै तुम्हें,
निशिवासर ही मैं बुलाया करूँ ।
तेरे नाम की माला सदा मैं प्रभु,
मन के मनकों पै फिराया करूँ ।।१।।
जिस पथ पर पाँव धरो तुम मैं,
पलकें तिस पन्थ बिछाया करूँ ।
भर लोचन की गगरी नित्य ही,
पद पंकज पै ढुलकाया करूँ ।।२।।

तुम आओ कभी यदि भूल यहाँ,
दृग नीर से पाँव पखराया करूँ ।
मन मन्दिर को कर स्वच्छ प्रभु,
उर आसन पै पधराया करूँ ।।३।।
मृदु मंजुल भाव की माला बना,
तेरी पूजा का साज सजाया करूँ ।
अब और नहीं कुछ पास मेरे,
नित्य प्रेम प्रसून चढ़ाया करूँ ।।४।।
तुम जान अयोग्य बिसारो मुझे,
पर मैं न तुम्हें बिसराया करूँ ।
गुन गान करूँ नित्य ध्यान धरूँ,
तुम मान करो मैं मनाया करूँ ।।५।।
तेरे प्रेम पुजारियों की पग धूलि,
सदा निज सीस चढ़ाया करूँ ।
तेरे भक्तों की भक्ति करूँ मैं सदा,
तेरे चाहने वालों को चाहा करूँ ।।६।।

[२९]

अमूल्य भेंट

देव ! तुम्हारे कई उपासक,
कई ढंग से आते हैं ।
सेवा में बहु मूल्य भेंट वे,
कई रंग से लाते हैं ।।१।।
धूमधाम से साज बाज से,
मन्दिर में पधराते हैं ।
मुक्ता मणि बहु मूल्य वस्तुयें,
ला कर तुम्हें चढ़ाते हैं ।।४।।
मैं गरीब अति निष्किंचन,
कुछ भी भेंट नहीं लाया ।
फिर भी साहस कर मन्दिर में,
पूजा करने को आया ।।३।।

नहीं दान है नहीं दक्षिणा,
खाली हाथ चला आया ।
पुजा की विधि नहीं जानता,
फिर भी नाथ चला आया ।।४।।
पूजा और पुजापा प्रभु जी,
इसी पुजारी को समझो ।
दान दक्षिणा और निछावर,
इसी भिखारी को समझो ।।५।।
मैं उन्मत्त प्रेम का भूखा,
हृदय दिखाने आया हूँ ।
जो कुछ है बस यही पास है,
इसे चढ़ाने आया हूँ ।।६।।
चरणों में अर्पित है इस को,
चाहे तो स्वीकार करो ।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है,
ठुकरा दो वा प्यार करो ।।७।।

[३०]

अनोखा निमन्त्रण

प्रभु जी भूल हमें मत जाना ।।
तुम पर हैं आशाएँ सारी ।
है दर्शन उत्कण्ठा भारी ।
स्वप्नों की सुन्दर नगरी में,
मधुर क्षणों में आना ।।१।।
निशा निराशा जब फिर आये ।
रह रह कर मन जब अकुलाये ।
नीरव रजनी के तम में तव,
चुपके चमक दिखाना ।।२।।
मानस पट पर चित्र तुम्हारा ।
ज्यों गगन में अंकित तारा ।
निशि में झिलमिल झिलमिल करता,
गाता प्रेम तराना ।।३।।

—०—

रात्रि के स्वपनों में देखूं ।
दिन को मैं पलकों में रख लूं ।
उषा के शुभ आँचल में हरि जी,
मन्द मन्द मुस्काना ।।४।।

[३१]

प्रीति प्रभु से जोड़ रे मन ।।
प्रभु जैसा कोई मीत नहीं है,
अनन्य प्रीति सी प्रीत नहीं है,
उस से ना मुख मोड़ रे मन ।।१।।
परम पुरुष के पुण्य नाम में,
पावन रूप परम धाम में,
भ्रम संशय सब छोड़ रे मन ।।२।।
निन्दा कुमति कुसंग कुमति से,
कुटिल कर्म कुभाव कुगति से,
नेह नाता अब तोड़ रे मन ।।३।।

[३२]

जीवन का मैं ने सौंप दिया,
सब भार तुम्हारे हाथों में ।
उद्धार पतन अब मेरा है,
सरकार तुम्हारे हाथों में ।।१।।
हम तुम को कभी नहीं भजते,
तुम हम को कभी नहीं तजते ।
अपकार हमारे हाथों में,
उपकार तुम्हारे हाथों में ।।२।।
हम पतित हैं तुम हो पतित-पावन,
हम नर हैं तुम हो नारायण ।
हम हैं संसार के हाथों में,
संसार तुम्हारे हाथों में ।।३।।
दृगबिन्दु बनाया करते हैं,
एक सेतु विरह के सागर का ।
जिस से हम पहुँचा करते हैं,
उस पार तुम्हारे हाथों में ।।४।।

महाराज जी को प्रिय

कीर्तन ध्वनियाँ

बोलो राम, बोलो राम,
बोलो राम, राम राम ।
श्री राम, श्री राम, श्री राम, राम राम ।
जय जय राम, जय जय राम,
जय जय राम, राम राम ।
जय रामं जय राम, जय जय राम,
राम राम राम राम, जय जय राम ।
पतित पावन नाम, भज ले राम राम राम ।
भज ले राम राम राम, भज ले राम राम राम ।
अशरण शरण शान्ति के धाम,
मुझे भरोसा तेरा राम ।
मुझे भरोसा तेरा राम,
मुझे भरोसा तेरा राम ।।

७. रामाय नमः, श्री रामाय नमः,
रामाय नमः, श्री रामाय नमः,
८. अहं भजामि रामं, सत्य शिवं मंगलम्
९. राम राम बोलो, मुख से राम राम बोलो
१०. श्री राम, जय राम, जय जय राम ।
११. जय श्री राम, जय जय श्री राम ।
१२. जय बोलो, जय बोलो,
भगवान राम की जय बोलो ।
१३. श्री राम जय जय, हरे राम जय जय ।
१४. मंगल नाम, जय जय राम ।
१५. मंगल नाम, राम राम ।
१६. परम गुरु, जय जय राम ।
१७. भज श्री रामं, मंगल धामम् ।
१८. वन्दे रामं, सच्चिदानन्दम् ।
१९. मेरे राम सर्वाधार, बार बार नमस्कार
२०. नमो नमः श्री राम, तुझ को नमो नमः

२१. भज श्री रामं, भज श्री रामं,
श्री रामं भज, विमलमते ।
२२. राम नाम गुण गा लो साधो,
राम नाम गुण गा लो ।
२३. राम नाम तुम भज लो साधो,
राम नाम तुम भज लो ।
२४. राम नाम सुखकारी सिमरो,
राम नाम सुखकारी ।
२५. वन्दना हो वन्दना,
राम प्यारे को मेरी वन्दना ।
२६. श्री राम चरण की धूल, भाल पर रमी रहे ।
चन्दन नीर कपूर, लेप हो जमी रहे ।।
२७. परम धाम श्री राम हमारे,
बसें चित्त में चरण तिहारे ।
२८. परम देव श्री राम हमारे,
बसें चित्त में चरण तिहारे ।
२९. अहन्नमामि रामं, सत्य शिवं मंगलम् ।

३०. प्रसीद देवेश, जगन्निवास ।
३१. श्री राम शरणं वयं प्रपनाः ।
३२. ज्योति से ज्योति जगा दे राम,
ज्योति से ज्योति जगा दे ।
३३. ज्योति से ज्योति जगा लो साजन,
ज्योति से ज्योति जगा लो ।
३४. ज्योति से ज्योति जगा लो बहिनो,
ज्योति से ज्योति जगा लो ।
३५. ज्योति जगे घट बीच, राम तेरी ज्योति जगे ।
३६. ज्योति जगे जग बीच, राम तेरी ज्योति जगे ।
३७. जाके राम धनी, वाको काहे की कमी ।
३८. पाया पाया पाया,
मैंने राम रतन धन पाया ।
३९. पाया पाया पाया,
मैंने राम नाम धन पाया ।
४०. तेरी बूटी ने मस्ती कीती राम,
तेरी बूटी ने मस्ती कीती ।

४१. लाइयां तोड़ निभाईं साइयां,
लाइयां तोड़ निभाईं ओ ।
४२. लाइयां तोड़ निभाइये,
नहीं तां न लाइये ।
४३. राम राम शान्ति,
श्री राम राम शान्ति ।
४४. शान्ति करो श्री राम,
जग में शान्ति करो ।
४५. कृपा करो श्री राम, सब पर कृपा करो ।
४६. दीनाबन्धु, दीनानाथ, लाज मेरी तेरे हाथ।
४७. मैं तो तेरा हूं, तेरा हूं, तेरा हूं राम ।
४८. मेरा तू, मेरा तू, मेरा तू ही एक है तू ।
४९. मेरे राम, मेरे राम, मेरे राम, मेरे राम ।
५०. रट मेरी रसना, सीताराम ।
५१. मुझे चैन कहां, प्यारे राम बिना ।
५२. श्री राम, जय राम, जय जय दयालु ।
हे राम, हे केशव, हे कृपालु ।।

५३. राम भज आँखें मींच,
धो दे जन्म जन्म के कीच ।

५४. श्री राम बिना, घनश्याम बिना,
मेरा धिग् जीवन, हरि नाम बिना ।

५५. मैं तो शरण तिहारी आया,
अब तो दया करो श्री राम ।
अब तो कृपा करो श्री राम ।

५६. जय सन्तों के परम सहायक,
जय मुनियों के राम हरे ।

५७. जिस रंग में हो, जिस रूप में हो,
हरि आन मिलो, हरि आन मिलो ।

५८. नाम बड़ा सुखदाई, राम जी का नाम बड़ा ।

५९. तू रम जा, श्री राम, मन में, तू रम जा ।

६०. तेरे चरण कमल में राम,
लिपट जाऊं रज बन के ।

६१. मेरे आत्मा रूपी मन्दिर में,
आ जाओ मेरे राम जी ।

६२. मन मन्दिर में गूंजते,
तेरे जय जय कारे राम ।

६३. लीला राम रचाई साधो,
लीला राम रचाई ।

६४. पतितों को तुम करो पुनीता,
हे राम सीता, हे राम सीता ।

६५. पतित जनों को करो पुनीता,
जय राम सीता, जय राम सीता ।

६६. पतित पावनी परम पुनीता,
जय मां सीता, जय मां सीता ।

६७. नमो नमः सीतावर राणी, नमो नमः ।

६८. भले बुरे तो तेरे, हम हैं भले बुरे तो तेरे ।

६९. मेरी रसना से प्रभु, तेरा नाम निकले,
हर घड़ी हर पल, राम राम निकले ।

७०. तेरी बीत गई रही थोड़ी,
मनुवा भज ले सीता राम ।

७१. रघुपति राघव राजा राम,
पतित पावन सीता राम ।

* कीर्तन–ध्वनियाँ *

७२. हुन लुट लो नसीबां वालो,
राम नाम लुट पै गई ।

७३. मेरे राम रघुनाथ, तेरी जय होवे,
जय होवे, तेरी जय होवे ।

७४. श्री राम तेरी आरती,
भगवान् तेरी आरती,
जगदीश तेरी आरती ।

७५. बार बार मिले राम,
मेला सज्जनां दा ।

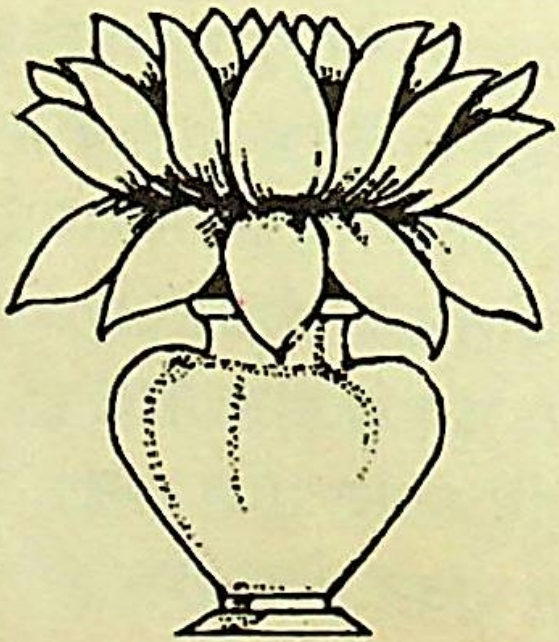

ग्रन्थ सूची

१. भक्ति प्रकाश
२. वाल्मीकीय रामायणसार
३. श्रीमद्भगवद्गीता
४. एकादशोपनिषद् संग्रह
५. प्रवचन पीयूश
६. प्रार्थना और उसका प्रभाव
७. उपासक का आन्तरिक जीवन
८. भक्ति और भक्त के लक्षण
९. स्थितप्रज्ञ के लक्षण
१०. भजन एवं ध्वनि संग्रह
११. अमृतवाणी

प्राप्ति स्थान :
श्रीरामशरणम्, ८, रिंग रोड, लाजपत नगर-४
नई दिल्ली-११००२४